अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

बच्चों के विकास पर गृह–पर्यावरण का प्रभाव
(Effect of Home Environment on Children)

डॉ. अभिलाषा शर्मा, अतिथि व्याख्याता
शासकीय गजानंद अग्रवाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
भाटापारा (छ.ग.)

सारांश –
गृह–पर्यावरण बच्चे के जीवन का पहला और सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक एवं शैक्षिक वातावरण होता है। बच्चे का जन्म, पालन–पोषण और प्रारम्भिक विकास मुख्य रूप से परिवार के वातावरण में होता है। घर में मिलने वाला प्रेम, सुरक्षा, अनुशासन, शिक्षा, संवाद, आर्थिक सुविधाएँ, पारिवारिक संबंध तथा माता–पिता का व्यवहार बच्चे के व्यक्तित्व और विकास को प्रभावित करते हैं।
एक सकारात्मक गृह–पर्यावरण बच्चे के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक तथा बौद्धिक विकास में सहायक होता है। इसके विपरीत, घर में तनाव, संघर्ष, उपेक्षा, असुरक्षा तथा अनुचित व्यवहार बच्चे के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं।
वर्तमान शोध–पत्र का उद्देश्य बच्चों के विकास में गृह–पर्यावरण की भूमिका का अध्ययन करना है। इस अध्ययन में गृह–पर्यावरण के विभिन्न तत्वों तथा उनके बच्चों के व्यक्तित्व, शिक्षा, व्यवहार और भावनात्मक विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि स्वस्थ, प्रेमपूर्ण, सुरक्षित और सहयोगात्मक पारिवारिक वातावरण बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है।

मुख्य शब्द– गृह–पर्यावरण, बाल विकास, परिवार, व्यक्तित्व, शिक्षा, भावनात्मक विकास, सामाजिक विकास।

1. प्रस्तावना

बच्चा किसी भी समाज और राष्ट्र का भविष्य होता है। उसका विकास केवल विद्यालय में प्राप्त शिक्षा से नहीं होता, बल्कि उसके विकास की शुरुआत परिवार और घर से होती है। घर बच्चे का पहला विद्यालय और माता–पिता उसके प्रथम शिक्षक माने जाते हैं।
बच्चा अपने परिवार के सदस्यों को देखकर अनेक बातें सीखता है। वह बोलने, व्यवहार करने, दूसरों के साथ संबंध बनाने तथा जीवन की आदतों को परिवार से सीखता है। इसलिए घर का वातावरण बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
गृह–पर्यावरण से आशय उन सभी परिस्थितियों और अनुभवों से है जो बच्चे को उसके घर और परिवार में प्राप्त होते हैं। इसमें माता–पिता का व्यवहार, परिवार के सदस्यों के आपसी संबंध, प्रेम और स्नेह, अनुशासन, शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण तथा आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियाँ शामिल होती हैं।
यदि घर का वातावरण शांतिपूर्ण, प्रेमपूर्ण और सहयोगात्मक होता है, तो बच्चा स्वयं को सुरक्षित और आत्मविश्वासी महसूस करता है। इसके विपरीत यदि घर में लगातार तनाव और संघर्ष हो, तो बच्चे के व्यवहार और भावनात्मक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।
इसलिए बच्चों के सर्वांगीण विकास को समझने के लिए गृह–पर्यावरण का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

2. गृह–पर्यावरण का अर्थ

गृह–पर्यावरण का अर्थ उस वातावरण से है जिसमें बच्चा अपने परिवार के साथ रहता है और प्रतिदिन विभिन्न अनुभव प्राप्त करता है।
गृह–पर्यावरण में निम्नलिखित बातें शामिल होती हैं–
1. माता–पिता का व्यवहार।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

2. परिवार के सदस्यों के आपसी संबंध।
3. घर का भावनात्मक वातावरण।
4. अनुशासन और नियम।
5. शिक्षा के प्रति परिवार का दृष्टिकोण।
6. आर्थिक परिस्थितियाँ।
7. बच्चों के प्रति प्रेम और देखभाल।
8. घर में उपलब्ध सुविधाएँ।
9. संवाद और विचारों की स्वतंत्रता।
10. सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य।

गृह–पर्यावरण बच्चे के व्यक्तित्व के निर्माण की आधारशिला है।

3. बाल विकास का अर्थ

बाल विकास एक निरंतर प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत बच्चे में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक और बौद्धिक परिवर्तन होते हैं।

बाल विकास के प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित हैं–

3.1 शारीरिक विकास

इसमें शरीर की वृद्धि, स्वास्थ्य, शक्ति तथा शारीरिक क्षमताओं का विकास शामिल है।

3.2 मानसिक एवं बौद्धिक विकास

इसमें सोचने, समझने, तर्क करने, याद रखने तथा समस्याओं को हल करने की क्षमता विकसित होती है।

3.3 भावनात्मक विकास

इसमें बच्चे की भावनाओं को समझने और उन्हें उचित रूप से व्यक्त करने की क्षमता का विकास होता है।

3.4 सामाजिक विकास

इसमें बच्चा दूसरों के साथ रहना, सहयोग करना, मित्रता करना तथा सामाजिक नियमों को सीखता है।

3.5 नैतिक विकास

इसमें बच्चा सही और गलत का अंतर, ईमानदारी, जिम्मेदारी और नैतिक मूल्यों को सीखता है।

4. अध्ययन के उद्देश्य

वर्तमान अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. गृह–पर्यावरण की अवधारणा को समझना।
2. बाल विकास में परिवार की भूमिका का अध्ययन करना।
3. बच्चों के शारीरिक विकास पर गृह–पर्यावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. बच्चों के मानसिक विकास पर गृह–पर्यावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. बच्चों के भावनात्मक विकास में परिवार की भूमिका को समझना।
6. बच्चों के सामाजिक विकास पर गृह–पर्यावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
7. शैक्षिक उपलब्धि और गृह–पर्यावरण के संबंध को समझना।
8. बच्चों के स्वस्थ विकास के लिए सकारात्मक गृह–पर्यावरण के सुझाव देना।

5. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में बच्चों का जीवन तेजी से बदल रहा है। परिवारों की जीवनशैली, शिक्षा, तकनीक तथा सामाजिक परिस्थितियों में परिवर्तन आया है। ऐसे समय में बच्चों के विकास में घर की भूमिका को समझना आवश्यक है।

गृह–पर्यावरण बच्चे के व्यक्तित्व की नींव तैयार करता है। परिवार में मिलने वाले अनुभव उसके भविष्य के व्यवहार और सोच को प्रभावित कर सकते हैं।

इस अध्ययन का महत्व निम्नलिखित है–

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

– माता–पिता को बच्चों की आवश्यकताओं को समझने में सहायता मिलेगी।
– शिक्षकों को बच्चों की पारिवारिक परिस्थितियों को समझने में मदद मिलेगी।
– बच्चों के स्वस्थ विकास के लिए सकारात्मक वातावरण बनाने की प्रेरणा मिलेगी।
– परिवार और विद्यालय के बीच बेहतर सहयोग स्थापित करने में सहायता मिलेगी।

6. गृह–पर्यावरण के प्रमुख तत्व

6.1 प्रेम और स्नेह

प्रेमपूर्ण वातावरण बच्चे को सुरक्षा और अपनापन प्रदान करता है। जब बच्चे को परिवार से प्रेम और सहयोग मिलता है, तो वह स्वयं को महत्वपूर्ण महसूस करता है।

प्रेमपूर्ण वातावरण से बच्चे में–
– आत्मविश्वास बढ़ता है।
– भावनात्मक सुरक्षा मिलती है।
– सकारात्मक सोच विकसित होती है।
– दूसरों के प्रति प्रेम और सम्मान की भावना बढ़ती है।

6.2 माता–पिता का व्यवहार

माता–पिता का व्यवहार बच्चे के विकास पर गहरा प्रभाव डालता है। बच्चे अक्सर अपने माता–पिता के व्यवहार का अनुकरण करते हैं।

यदि माता–पिता–
– सम्मानपूर्वक बातचीत करते हैं,
– धैर्य रखते हैं,
– बच्चों को समझते हैं,
– उचित मार्गदर्शन देते हैं,
तो बच्चे भी सकारात्मक व्यवहार सीखते हैं।

6.3 पारिवारिक संबंध

परिवार के सदस्यों के बीच अच्छे संबंध बच्चों के विकास के लिए आवश्यक हैं।

घर में सहयोग और सम्मान का वातावरण होने पर बच्चाकृ
– सहयोग करना सीखता है।
– संबंधों का महत्व समझता है।
– दूसरों के प्रति संवेदनशील बनता है।
– सामाजिक कौशल विकसित करता है।

6.4 शिक्षा के प्रति वातावरण

घर में शिक्षा को महत्व दिए जाने से बच्चे की पढ़ाई के प्रति रुचि बढ़ सकती है।

माता–पिता बच्चों की शिक्षा में सहायता कर सकते हैंकृ
– पढ़ाई के लिए उचित वातावरण देकर।
– नियमित अध्ययन की आदत विकसित करके।
– बच्चों को प्रोत्साहित करके।
– उनकी उपलब्धियों की सराहना करके।

7. गृह–पर्यावरण का शारीरिक विकास पर प्रभाव

बच्चे के शारीरिक विकास में घर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

परिवार बच्चे को–
– पौष्टिक भोजन,
– उचित आराम,
– स्वच्छता,
– स्वास्थ्य संबंधी देखभाल,
– खेलकूद के अवसर प्रदान करता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

स्वस्थ घरेलू वातावरण बच्चे के शरीर और स्वास्थ्य के विकास में सहायता करता है। उचित दिनचर्या और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बच्चे में अच्छी आदतों का निर्माण करती है।

8. गृह–पर्यावरण का मानसिक विकास पर प्रभाव

मानसिक विकास में बच्चे की सोचने, समझने और सीखने की क्षमता शामिल होती है।

घर में सकारात्मक बौद्धिक वातावरण होने पर बच्चा प्रश्न पूछने और नई चीजें सीखने के लिए प्रेरित होता है।

मानसिक विकास को बढ़ाने वाले घरेलू अनुभव हैंकृ

– बच्चों से बातचीत करना।
– कहानी सुनाना।
– पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करना।
– प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता देना।
– नई चीजें सीखने के अवसर देना।

इस प्रकार परिवार बच्चे के मानसिक विकास का महत्वपूर्ण केंद्र है।

9. गृह–पर्यावरण का भावनात्मक विकास पर प्रभाव

भावनात्मक विकास बच्चों के जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष है। बच्चे को अपनी भावनाओं को समझने और व्यक्त करने के लिए सुरक्षित वातावरण की आवश्यकता होती है।

जब परिवार बच्चे की बात ध्यान से सुनता है और उसकी भावनाओं का सम्मान करता है, तो बच्चा भावनात्मक रूप से अधिक संतुलित हो सकता है।

सकारात्मक गृह–पर्यावरण से बच्चे मेंकृ

– आत्मविश्वास,
– धैर्य,
– भावनात्मक संतुलन,
– सुरक्षा की भावना

विकसित हो सकती है।

10. गृह–पर्यावरण का सामाजिक विकास पर प्रभाव

परिवार बच्चे का पहला सामाजिक समूह होता है। बच्चा सबसे पहले अपने परिवार के सदस्यों के साथ रहकर सामाजिक व्यवहार सीखता है।

परिवार से बच्चा सीखता हैकृ

– दूसरों का सम्मान करना।
– सहयोग करना।
– अपनी बात कहना।
– दूसरों की बात सुनना।
– जिम्मेदारी निभाना।
– सामाजिक नियमों का पालन करना।

इस प्रकार स्वस्थ पारिवारिक वातावरण बच्चे के सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

11. गृह–पर्यावरण और व्यक्तित्व विकास

व्यक्तित्व का निर्माण बचपन से शुरू होता है। घर में मिलने वाले अनुभव बच्चे की सोच और व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

यदि बच्चे को

– सम्मान,
– प्रेम,
– प्रोत्साहन,
– सुरक्षा,
– उचित मार्गदर्शन

मिलता है, तो उसके व्यक्तित्व का विकास सकारात्मक दिशा में हो सकता है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

परिवार बच्चे में आत्मविश्वास और जिम्मेदारी की भावना विकसित करने में सहायता करता है।

12. गृह–पर्यावरण और शैक्षिक उपलब्धि

बच्चे की शिक्षा में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

घर में अध्ययन के लिए अनुकूल वातावरण होने से बच्चा पढ़ाई पर बेहतर ध्यान दे सकता है।

माता–पिता बच्चों की शिक्षा में निम्न प्रकार से सहायता कर सकते हैंकृ

1. नियमित अध्ययन की आदत विकसित करना।
2. पढ़ाई के लिए शांत वातावरण देना।
3. बच्चों को प्रोत्साहित करना।
4. विद्यालय की गतिविधियों में रुचि लेना।
5. बच्चों की कठिनाइयों को समझना।

सकारात्मक पारिवारिक सहयोग बच्चे की शैक्षिक प्रगति में सहायक हो सकता है।

13. नकारात्मक गृह–पर्यावरण का प्रभाव

हर घर का वातावरण हमेशा सकारात्मक नहीं होता। कुछ परिस्थितियाँ बच्चों के विकास के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकती हैं।

उदाहरण के लिए–

– परिवार में लगातार तनाव।
– आपसी संवाद की कमी।
– बच्चे की उपेक्षा।
– अत्यधिक कठोर व्यवहार।
– शिक्षा के प्रति उदासीनता।
– अस्थिर पारिवारिक वातावरण।

ऐसे वातावरण से बच्चे के व्यवहार, आत्मविश्वास और सीखने की प्रक्रिया पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

इसलिए परिवार में सम्मान, संवाद और सहयोग की आवश्यकता होती है।

14. माता–पिता की भूमिका

माता–पिता बच्चे के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण मार्गदर्शक होते हैं।

माता–पिता को चाहिए कि वेकृ

1. बच्चों को समय दें

बच्चों के साथ बातचीत करना और उनकी बात सुनना आवश्यक है।

2. सकारात्मक प्रोत्साहन दें

बच्चों के प्रयासों की सराहना करने से उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।

3. उचित अनुशासन रखें

अनुशासन का उद्देश्य बच्चे को जिम्मेदार बनाना होना चाहिए।

4. अच्छे व्यवहार का उदाहरण प्रस्तुत करें

बच्चे अपने आसपास के व्यवहार से सीखते हैं।

5. शिक्षा में सहयोग करें

बच्चों की पढ़ाई और सीखने की गतिविधियों में रुचि लेना उपयोगी होता है।

15. शिक्षकों की भूमिका

विद्यालय और परिवार दोनों बच्चे के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शिक्षकों को बच्चों की पारिवारिक परिस्थितियों को समझने का प्रयास करना चाहिए। माता–पिता और शिक्षकों के बीच सहयोग से बच्चे की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझा जा सकता है।

विद्यालय बच्चों में

– आत्मविश्वास,
– सहयोग,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

– अनुशासन,
– नैतिकता,
– सामाजिक जिम्मेदारी
के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

16. अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष

इस अध्ययन से निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त होते हैं
1. गृह–पर्यावरण बाल विकास का महत्वपूर्ण आधार है।
2. परिवार बच्चे का पहला सामाजिक और शैक्षिक वातावरण होता है।
3. प्रेमपूर्ण वातावरण बच्चे में आत्मविश्वास विकसित करता है।
4. माता–पिता का व्यवहार बच्चे के व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।
5. सकारात्मक पारिवारिक संबंध सामाजिक विकास में सहायक होते हैं।
6. शिक्षा के प्रति परिवार का सकारात्मक दृष्टिकोण बच्चे की शैक्षिक प्रगति में सहायक हो सकता है।
7. घर में उचित संवाद बच्चे के भावनात्मक विकास के लिए महत्वपूर्ण है।
8. स्वस्थ गृह–पर्यावरण बच्चों के सर्वांगीण विकास में योगदान देता है।
9. माता–पिता और शिक्षकों का सहयोग बच्चों के विकास को बेहतर बना सकता है।
10. बच्चों के लिए सुरक्षित, प्रेमपूर्ण और सहयोगात्मक वातावरण आवश्यक है।

17. सुझाव

बच्चों के स्वस्थ विकास के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जाते हैंकृ
1. घर में प्रेमपूर्ण वातावरण बनाया जाए।
2. बच्चों के साथ नियमित बातचीत की जाए।
3. उनकी समस्याओं और भावनाओं को ध्यान से सुना जाए।
4. बच्चों को उचित शिक्षा और मार्गदर्शन दिया जाए।
5. परिवार में आपसी सम्मान और सहयोग का वातावरण रखा जाए।
6. बच्चों को खेलकूद और रचनात्मक गतिविधियों के अवसर दिए जाएँ।
7. माता–पिता बच्चों के लिए सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करें।
8. बच्चों की तुलना दूसरों से करने के बजाय उनके व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित किया जाए।
9. घर और विद्यालय के बीच सहयोग बढ़ाया जाए।
10. बच्चों को सुरक्षित और सहयोगात्मक वातावरण प्रदान किया जाए।

18. निष्कर्ष

बच्चों का विकास केवल शारीरिक वृद्धि तक सीमित नहीं है। उनके मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक और शैक्षिक विकास में गृह–पर्यावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

घर बच्चे के जीवन का पहला विद्यालय है और परिवार उसके व्यक्तित्व निर्माण की पहली संस्था है। परिवार में मिलने वाला प्रेम, स्नेह, सुरक्षा, अनुशासन और मार्गदर्शन बच्चे के भविष्य को प्रभावित करते हैं। एक सकारात्मक गृह–पर्यावरण बच्चे में आत्मविश्वास, सहयोग, जिम्मेदारी और सकारात्मक सोच विकसित करने में सहायता करता है। वहीं नकारात्मक वातावरण बच्चे के विकास के लिए कठिनाइयाँ उत्पन्न कर सकता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए घर का वातावरण प्रेमपूर्ण, सुरक्षित, सहयोगात्मक और शिक्षाप्रद होना चाहिए। माता–पिता, परिवार और शिक्षक मिलकर बच्चों को ऐसा वातावरण प्रदान कर सकते हैं जिसमें वे स्वस्थ, आत्मविश्वासी और जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

अंततः, एक स्वस्थ परिवार ही एक स्वस्थ और संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण की मजबूत आधारशिला है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 7.789 Volume 14-Issue 03, (July-Sep 2026)

संदर्भ हेतु विषय

इस शोध–पत्र को आगे और विस्तृत करने के लिए निम्न क्षेत्रों से प्रमाणिक शैक्षणिक स्रोतों का अध्ययन किया जा सकता है–

1. बाल विकास एवं मनोविज्ञान।
2. पारिवारिक वातावरण और बाल व्यवहार।
3. शिक्षा मनोविज्ञान।
4. बाल समाजीकरण।
5. माता–पिता और बाल विकास।
6. परिवार तथा शैक्षिक उपलब्धि।

निष्कर्ष–

"गृह–पर्यावरण बच्चे के सर्वांगीण विकास का आधार है। प्रेम, सुरक्षा, सहयोग, उचित अनुशासन और सकारात्मक संवाद से युक्त पारिवारिक वातावरण बच्चे के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है।"